आचार्य जोइन्दु (योगीन्दु, योगीन्द्र) देव

जीवन-परिचय : जैन परम्परा में 'जोइंदु' या योगीन्द्र देव एक श्रेष्ठ आचार्य है। संस्कृत-टीकाकारों ने जोइंदु को योगीन्दु नाम से प्रचलित किया है और इसी नाम से ये प्रसिद्ध भी हुए हैं।

आचार्य योगीन्दु का अपभ्रंश भाषा पर अपूर्व अधिकार है। इन्होंने अपने ग्रन्थों में आत्मा का सुन्दर चित्रण किया है। ये क्रान्तिकारी विचारधारा के प्रवर्त्तक हैं। इसी कारण इन्होंने बाह्य आडम्बर का खण्डन कर आत्मज्ञान पर जोर दिया है। आचार्य योगीन्दु ने रहस्यवाद का भी सुन्दर निरूपण किया है।

डॉ. ए. एन. उपाध्ये ने अपनी परमात्मप्रकाश की प्रस्तावना में योगीन्दु का समय ईसा की छठी शताब्दी माना है।

रचना-परिचय : जोइन्दु की निम्नलिखित रचनाएँ मानी जाती हैं।

1. परमात्मप्रकाश : योगीन्दु मुनिराज ने अपने शिष्य भट्ट प्रभाकर को मोक्षमार्ग समझाने के लिए परमात्मप्रकाश की रचना की थी। यह अपभ्रंश भाषा का सबसे प्राचीन आध्यात्मिक ग्रन्थ है। इसमें दो अधिकार हैं। प्रथम अधिकार में 126 दोहे हैं। इसमें बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा के स्वरूप को समझाया है। दूसरे अधिकार में 219 दोहों में मोक्ष का स्वरूप समझाया है।

2. **योगसार :** योगसार में 108 दोहे हैं। विषय-वर्णन प्राय: परमात्मप्रकाश के समान है। अपभ्रंश भाषा में लिखा गया यह ग्रन्थ एक प्रकार से परमात्मप्रकाश का सार कहा जा सकता है।

3. **अमृताशीति :** यह ग्रन्थ एक उपदेश-प्रधान रचना है इसमें 82 पद्य हैं, जिनमें ध्यान योग के अनेक विषयों की चर्चा की गयी है।

4. **निजात्माष्टक :** यह आठ पद्यों का एक स्तोत्र है। इसकी भाषा प्राकृत है। इसमें सिद्ध परमेष्ठी का स्वरूप बतलाया है।

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त आचार्य योगीन्दु के नाम पर नौकाश्रावकाचार, अध्यात्मसन्दोह, सुभाषित तन्त्र, तत्त्वार्थटीका, दोहापाहुड आदि अनेक रचनाएँ भी प्राप्त होती हैं।